में वृद्धि हुई है जिसका प्रमाण यह है कि वर्ष 1991-92 के दौरान यह 447.49 करोड़ रुपये था जो वर्ष 1994-95 में बढ़कर 633.34 करोड़ रुपये हो गया। हथकरघा क्षेत्र में क्रेडिट के स्तर को और बढ़ाने के लिए सरकार सभी संभव प्रयत्न कर रही है।

Govt. Programme of Public Borrowing

43. DR. BAPU KALDATE:
SHRI KRISHAN LAL SHARMA:

Will the Minister of FINANCE be pleased be state:

(a) whether it is a fact that Government's programme of public borrowing has proved a failure for the third time when the public issue of Rs. 2,000 crore received only 52% subscription; and

(b) if so, the reasons for this failure?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (DR. DEBI-PROSAD PAL): (a) and (b) There was no failure of Government's public borrowing programme. The last three issue of Central Government' loans (with notified amount of Rs. 2,000 crore each) were not fully subscribed by the public resulting in development on Reserve Bank of India. The total amount subscribed by the public was Rs. 3066.85 crore and the aggregate amount devolving on Reserve Bank was Rs. 2933.15 crore. The share of subscription received from public in respect of the loans is 51 per cent and the share of subscription by Reserve Bank is 49 per cent. The response from public was lower mainly due to tight money market conditions and increase in commercial banks' non-food credit by about Rs. 48,000 crore during the current financial year up to Junuary 19, 1996, over that of last year.

विदेशी मुद्राओं की तुलना में रुपए के मूल्य में गिरावट

44. **श्री एस० एस० सुरजेवाला:**
श्री राघवजी:
श्री वी० नारायणसामी:

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) उन विदेशी मुद्राओं के नाम क्या हैं जिनकी तुलना में रुपए के मूल्य में इस समय उसके 31 मार्च, 1995 के मूल्य की तुलना में, गिरावट आई है और यह गिरावट मुद्रा-वार कितनी-कितनी है;

(ख) रुपए के मूल्य में आई इस गिरावट के क्या कारण हैं और भारत की अर्थव्यवस्था पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है; और

(ग) रुपए के मूल्य में गिरावट को रोकने के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा क्या कदम उठाए जा रहे हैं; यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० देबी प्रसाद पाल): (क) अमरीकी डालर, पौंड स्टर्लिंग, ड्यूश मार्क (डी एम) और फ्रांसीसी फ्रांक की 31 मार्च, 1995 की दरों की तुलना में 23 फरवरी, 1996 की स्थिति के अनुसार रुपए में अवमूल्यन हुआ है। इन करेंसियों की तुलना में रुपए के अवमूल्यन का विवरण नीचे दिया गया है:—

तारीख	प्रति विदेशी मुद्रा की तुलना में रुपए की विनिमय दर			
	अमरीकी डालर	पौंड स्टर्लिंग	ड्यूश मार्क	फ्रांसीसी फ्रांक
31 मार्च, 95	31.495	50.565	22.300	6.412
23 फरवरी, 96	36.560	56.458	25.269	7.338
रुपए का अवमूल्यन (-) (प्रतिशत)	-13.85	-10.44	-11.75	-12.62

जापानी येन की तुलना में, इन दो संदर्भित तारीखों के बीच रुपए का अधिमूल्यन हुआ।

(ख) और (ग) रुपए की विनिमय दर बाजार द्वारा निर्धारित होती है। रुपए का सांकेतिक रूप में यह अवमूल्यन हाल के वर्षों में रुपए के वास्तविक अर्थों में 1993-94 से हुए अधिमूल्यन के संबंध में बाजार सुधार है। विनिमय दर में हाल के परिवर्तन ने भारत की प्रतियोगितात्मकता को बहाल किया है और यह निर्यात संवृद्धि को सुदृढ़ बनाए रखने और आयात में वृद्धि को नियंत्रित करने की सुनिश्चितता में सहायता करेगा। ये दोनों कारक व्यापार घाटे को प्रबंध योग्य स्तरों पर नियंत्रित रखने में सहायता करेंगे।

रुपए की विनिमय में दर अव्यवहारिक कारणों से हाल की अवधि में अत्यधिक स्थिरता देखने में आई है। इसका भा० रि० बैंक द्वारा उचित उपायों के जरिए सक्रिय रूप से सामना किया गया। भारतीय अर्थव्यवस्था सुदृढ़ और लचीली बनी हुई है, जिसे घरेलू और विदेशी क्षेत्रों के कार्य-निष्पादनों द्वारा आंका जा सकता है।

हस्तशिल्प की वस्तुओं का निर्यात

45. **श्री कनकसिंह मोहनसिंह मंगरोला:**
चौधरी हरमोहन सिंह:

क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) देश में ऐसे कुल कितने पंजीकृत एकक हैं जो हस्तशिल्प की वस्तुओं का निर्यात करते हैं;

(ख) हस्तशिल्प की वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा देने की दृष्टि से सरकार द्वारा निर्यातकों को प्रदान की जा रही रियायतों और सुविधाओं का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार हस्तशिल्प की वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए कोई और नई योजना प्रारंभ करने का विचार रखती है; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

वस्त्र मंत्री (श्री जी० वेंकट स्वामी): (क) देश में 9060 पंजीकृत हस्तशिल्प निर्यात एकक हैं। इनमें से 6500 एकक हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद में पंजीकृत हैं तथा 2560 कालीन निर्यात संवर्धन परिषद में पंजीकृत हैं।

(ख) सरकार द्वारा निर्यातकों को हस्तशिल्प के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए दी जा रही रियायतों तथा सुविधाओं में ये शामिल हैं: शुल्क वापिसी, ब्याज की रियायती दरों पर पूर्व तथा पश्च पोतलदान ऋण, 32 माइक्रोन तथा इसके ऊपर की कालीन ग्रेड वूल पर 10 प्रतिशत यथामूल्य की दर पर रियायती आयात शुल्क, हस्त शिल्प निर्यातकों द्वारा कुल विदेशी मुद्रा उपार्जन पर निर्यात गृह/व्यापार गृह/स्टार व्यापार गृह तथा सुपर स्टार व्यापार गृह को मान्यता देने के प्रयोजन से ट्रिपल वेटेज तथा हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद तथा कालीन निर्यात संवर्धन परिषद के सदस्य निर्यातकों की समय-समय पर आयोजित विभिन्न संवर्धनात्मक कार्य-कलापों में भागीदारी।

(ग) और (घ) निर्यात संवर्धन योजनाओं में विदेशों में बिक्री-सह-अध्ययन दल प्रायोजित करना, अंतर्राष्ट्रीय मेले तथा प्रदर्शनियों में भाग लेना, क्रेता-विक्रेता बैठकें आयोजित करना, समुद्रपार प्रचार तथा कैटलाग का प्रकाशन, सेमिनार तथा कार्यशालाओं का संचालन तथा हाल ही में संस्थापित वार्षिक आधार पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हस्तशिल्प तथा उपहार मेले तथा अखिल भारतीय कालीन व्यापार मेले को सुदृढ़ करना शामिल है।

इसके अतिरिक्त देश में हस्तशिल्प के विकास तथा संवर्धन के लिए सरकार विभिन्न योजनाएं जैसे प्रशिक्षण, प्रदर्शनी तथा प्रचार, विपणन विकास सहायता, डिजायन विकास, सर्वेक्षण तथा अध्ययन आदि कार्यान्वित करती है।

Emergence of small scale private suppliers of power due to power shortage

46. SHRI KRISHAN LAL SHARMA: Will the Minister of POWER be pleased to state:

(a) whether it is a fact that peaking shortage of power supply in thee country is 20% at present;

(b) whether it is also a fact that this shortage has led to the emergence of a network of small scale private suppliers of power supplying power at an enhanced rate to the manufacturers and other industrial establishments;

(c) whether Government contemplate to come out with similar arrangements; and